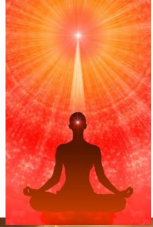

"ज्वालामुखी तपस्या द्वारा मैं-पन की पूंछ को जलाकर बापदादा समान बनो तब समाप्ति समीप आयेगी"

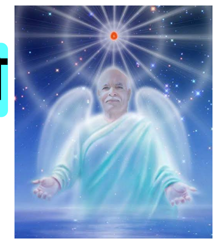
=
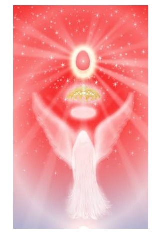

closing ceremony

आज अखुट अविनाशी खजानों के मालिक बापदादा अपने चारों ओर के सम्पन्न बच्चों के जमा का खाता देख रहे हैं। तीन प्रकार के खाते देख रहे हैं - एक है अपने पुरुषार्थ द्वारा श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाता। दूसरा है सदा सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना, यह सन्तुष्टता द्वारा दुवाओं का खाता। तीसरा है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा बेहद के नि:स्वार्थ सेवा द्वारा पुण्य का खाता। आप सभी भी अपने इन तीन खातों को चेक करते ही हो। यह तीनों खाते जमा कितने हैं, हैं वा नहीं हैं उसकी निशानी हैं - सदा सर्व प्रति, स्वयं प्रति सन्तुष्टता स्वरूप, सर्व प्रति शुभ भावना, शुभ कामना और सदा अपने को खुशनुम:, खुशनसीब स्थिति में अनुभव करना। तो चेक करो दोनों खाते की निशानियां स्वयं में अनुभव होती हैं? इन सर्व

स्वयं	सर्व
संतुष्टता	संतुष्टता
खुशनुमः खुशनसीब	शुभ भावना शुभ कामना

खजानों को जमा करने की चाबी है - निमित्त भाव, निर्माण भाव, नि:स्वार्थ भाव। चेक करते जाओ और चाबी का नम्बर पता है! चाबी का नम्बर है - तीन बिन्दी। थ्री डॉट। एक - आत्मा बिन्दी, दूसरा - बाप बिन्दी, तीसरा - ड्रामा का फुल स्टाप बिन्दी। आप सभी के पास चाबी तो है ना! खजाने को खोलकर देखते रहते हो ना! इन सभी खजानों के वृद्धि की विधि है - दृढ़ता। दृढ़ता होगी तो किसी भी कार्य में यह संकल्प नहीं चलेगा कि होगा या नहीं होगा। दृढ़ता की स्थिति है - हुआ ही पड़ा है, बना ही पड़ा है। बनेगा, जमा होगा, नहीं होगा, नहीं। करते तो हैं, होना तो चाहिए,... तो तो भी नहीं। दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि, निश्चिंत और निश्चित अनुभव करेगा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है - अगर ज्यादा से ज्यादा सर्व खजाने का खाता जमा करना है तो मनमनाभव के मंत्र को यंत्र बना दो। जिससे सदा बाप के साथ और पास रहने का स्वत: (Automatically) अनुभव होगा। पास होना ही है, तीन रूप के पास हैं - एक है पास रहना, दूसरा है जो बीता सो पास हुआ और तीसरा है पास विद ऑनर होना। अगर तीनों पास

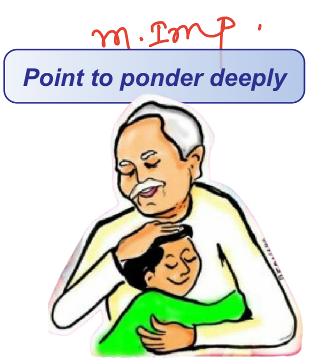

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Call of Time/ समय की पुकार

भक्तों की पुकार

मन की पुकार

Whether you are Ready or Not...

हैं, तो आप सबको राज्य अधिकारी बनने की फुल पास है। तो फुल पास ले ली है वा लेनी है? जिन्होंने फुल पास ले ली है वह हाथ उठाओ। लेनी नहीं है, ले ली है? पहली लाइन वाले नहीं उठाते, लेनी है आपको? सोचते हैं अभी सम्पूर्ण नहीं बने हैं, इसीलिए। लेकिन निश्चय-बुद्धि विजयी हैं ही, या होना है? अभी तो समय की पुकार, भक्तों की पुकार, अपने मन की आवाज क्या आ रही है? अभी-अभी सम्पन्न और समान बनना ही है वा यह सोचते हैं बनेंगे, सोचेंगे, करेंगे...! अब समय के अनुसार हर समय एवररेडी का पाठ पक्का रहना ही है। जब मेरा बाबा कहा, प्यारा बाबा, मीठा बाबा मानते ही हैं। तो जो प्यारा होता है उसके समान बनना मुश्किल नहीं होता।

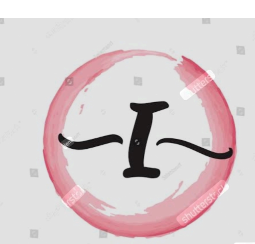

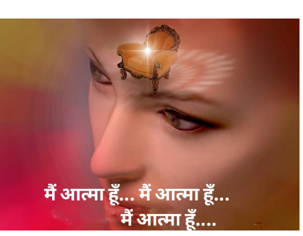

बापदादा ने देखा है कि समय प्रति समय समान बनने में जो विघ्न पड़ता है वह सबके पास प्रसिद्ध शब्द है, सब जानते हैं, अनुभवी हैं। वह है “मैं", मैं-पन, इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है जब भी मैं शब्द बोलते हो तो सिर्फ मैं नहीं बोलो, मैं आत्मा। जुड़वा शब्द बोलो। तो मैं कभी अभिमान ले आता, बॉडी कान्सेस वाला मैं, आत्मा वाला नहीं। कभी

अभिमान भी लाता, कभी अपमान भी लाता है। कभी दिलशिकस्त भी बनाता इसलिए इस बॉडी कान्सेस के मैं-पन को स्वप्न में भी नहीं आने दो।

Not even in a Dream

बापदादा ने देखा है स्नेह की सब्जेक्ट में मैजॉरिटी पास हैं। आप सभी को किसने यहाँ लाया? सभी चाहे प्लेन में आये हो, चाहे ट्रेन में, चाहे बस में आये हो, लेकिन वास्तव में बापदादा के स्नेह के विमान में यहाँ पहुंचे हो। तो जैसे स्नेह की सबजेक्ट में पास हैं, अब यह कमाल करो - समान बनने की सबजेक्ट में भी पास विद आनर बनके दिखाओ। पसन्द है? समान बनना पसन्द है? पसन्द है लेकिन बनने में थोड़ा मुश्किल है! समान बन जाओ तो समाप्ति सामने आयेगी। लेकिन कभी-कभी जो दिल में प्रतिज्ञा करते हो, बनना ही है। तो प्रतिज्ञा कमजोर हो जाती और परीक्षा मजबूत हो जाती है। चाहते सभी हैं लेकिन चाहना एक होती है प्रैक्टिकल दूसरा हो जाता है क्योंकि प्रतिज्ञा करते हो लेकिन दृढ़ता की कमी पड़ जाती है। समानता दूर हो जाती है, समस्या प्रबल हो जाती है। तो अब क्या करेंगे?

Call of Time/ समय की पुकार

योग अग्नि

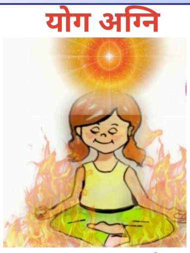

Refer last page
दृढ़ता सम्पन्न song

Call of Time/ समय की पुकार

बापदादा को एक बात पर बहुत हंसी आ रही है। कौन सी बात? हैं महावीर लेकिन जैसे शास्त्रों में हनुमान को महावीर भी कहा है लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है मैं-पन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी इस मैं, मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं। ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना है? अब यह मन में धुन लगी हुई हो - समान बनना ही है, समाप्ति को समीप लाना ही है। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा है ना तो समाप्ति क्यों हो? लेकिन आप बाप समान दयालु, कृपालु, रहम-दिल आत्मायें हो, तो आज की दु:खी आत्मायें और भक्त आत्माओं के ऊपर हे रहमदिल आत्मायें रहम करो। मर्सीफुल बनो। दु:ख बढ़ता जा रहा है, दु:खियों पर रहम कर उन्हों को मुक्तिधाम में तो भेजो। सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता है मन्सा और वाणी की सेवा साथ-साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चांस मिले सेवा का, यह नहीं सोचो, चलते फिरते अपने चेहरे

वाचा } Both सेवा Combined

और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चलो। आपका चेहरा बाप का परिचय दे। आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले। तो ऐसे सदा सेवाधारी भव! अच्छा।

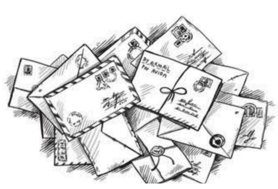

बापदादा के सामने स्थूल में तो आप सभी बैठे हो लेकिन सूक्ष्म स्वरूप से चारों ओर के बच्चे दिल में हैं। देख भी रहे हैं, सुन भी रहे हैं। देश विदेश के अनेक बच्चों ने ईमेल द्वारा, पत्रों द्वारा, सन्देशों द्वारा यादप्यार भेजी है। सभी की नाम सहित बापदादा को याद मिली है और बापदादा दिल ही दिल में सभी बच्चों को सामने देख गीत गा रहे हैं - वाह! बच्चे वाह! हर एक को इस समय इमर्ज रूप में याद रहती है। सब सन्देशी को अलग-अलग कहते हैं फलाने ने याद भेजी है, फलाने ने याद भेजी है। बाप कहते हैं, बाप के पास तो जब संकल्प करते हो, साधन द्वारा पीछे मिलती है लेकिन स्नेह का संकल्प साधन से पहले पहुंच जाता है। ठीक है ना! कईयों को याद मिली है ना! अच्छा।

समजा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

For Newcommers

अच्छा - पहले हाथ उठाओ जो पहले बारी आये हैं। यह सेवा में भी पहले बारी आये हैं। अच्छा बापदादा कहते हैं, भले पधारे, आपके आने की मौसम है। अच्छा।

Welcome

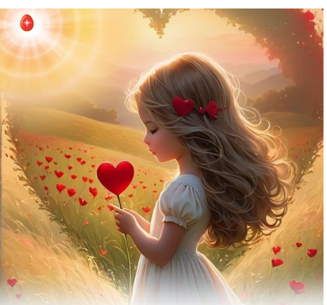

इन्दौर ज़ोन:- (सबके हाथ में "मेरा बाबा" का दिल के सेप में सिम्बल है) हाथ तो बहुत अच्छे हिला रहे हैं, लेकिन दिल को भी हिलाना। सिर्फ सदा याद रखना, भूलना नहीं मेरा। अच्छा चांस लिया है, बापदादा सदा कहते हैं, हिम्मत रखने वालों को बापदादा पदमगुणा मदद देता है। तो हिम्मत रखी है ना! अच्छा किया है। इन्दौर ज़ोन है। अच्छा है इन्दौर ज़ोन साकार बाबा का लास्ट स्मृति का स्थान है। अच्छा है। सभी बहुत खुश हो रहे हो ना! गोल्डन लाटरी मिली है। ज़ोन की सेवा मिलने से सभी सेवाधारियों को छुट्टी मिल जाती है और वैसे संख्या में मिलती है इतने लाओ और अभी देखो इतने हैं। यह भी ज़ोन ज़ोन को अच्छा चांस है ना, जितने लाने हो लाओ। तो आप सभी का थोड़े समय में पुण्य का खाता कितना बड़ा इकट्ठा हो गया। यज्ञ सेवा दिल से करना अर्थात् अपने पुण्य का खाता तीव्रगति से बढ़ाना क्योंकि (1) संकल्प,

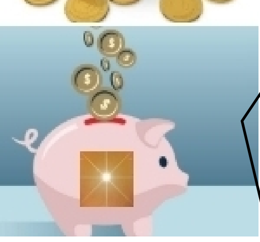

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

please .. Never under estimate the Power of ...

समय और शरीर तीनों सफल किया। संकल्प भी चलेगा तो यज्ञ सेवा का, समय भी यज्ञ सेवा में व्यतीत हुआ और शरीर भी यज्ञ सेवा में अर्पण किया। तो सेवा है या मेवा है? प्रत्यक्ष फल यज्ञ सेवा करते किसी के पास कोई व्यर्थ संकल्प आया? आया किसके पास? खुश रहे और खुशी बांटी। तो यह जो यहाँ गोल्डन अनुभव किया, इस अनुभव को वहाँ भी इमर्ज कर बढ़ाते रहना। कभी भी कोई माया का संकल्प भी आवे तो मन के विमान से शान्तिवन में पहुंच जाना। मन का विमान तो है ना! सभी के पास मन का विमान है। बाप-दादा ने हर ब्राह्मण को जन्म की सौगात श्रेष्ठ मन का विमान दे दिया है। इस विमान में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। स्टार्ट करना है तो मेरा बाबा, बस। चलाना आता है ना विमान! तो जब भी कुछ हो मधुबन में पहुंच जाओ। भक्ति मार्ग में चार धाम करने वाले अपने को बहुत भाग्यवान समझते हैं और मधुबन में भी चार धाम हैं, तो चार धाम किये? पाण्डव भवन में देखो, चार धाम हैं। जो भी आते हो पाण्डव भवन तो जाते हो ना, एक शान्ति स्तम्भ महाधाम। दूसरा बापदादा का कमरा, यह स्नेह का धाम। और तीसरा झोपड़ी, यह स्नेहमिलन का धाम और चौथा

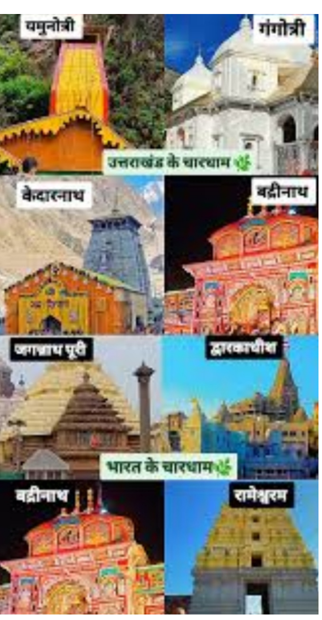

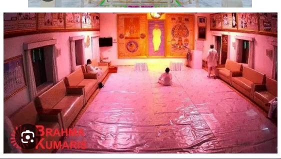

- हिस्ट्री हाल, तो आप सभी ने चार धाम किये? तो महान भाग्यवान तो हो ही गये। अभी किसी भी धाम को याद कर लेना, कब उदास हो जाओ तो झोपड़ी में रूहरिहान करने आ जाना। शक्तिशाली बनने की आवश्यकता हो तो शान्ति स्तम्भ में पहुंच जाना और वेस्ट थॉट्स बहुत तेज हो, बहुत फास्ट हों तो हिस्ट्री हाल में पहुंच जाना। समान बनने का दृढ़ संकल्प उत्पन्न हो तो बापदादा के कमरे में आ जाना। अच्छा है, सभी ने गोल्डन चांस लिया है लेकिन वहाँ रहते भी सदा गोल्डन चांस लेते रहना। अच्छा। हिम्मतवान अच्छे हैं।

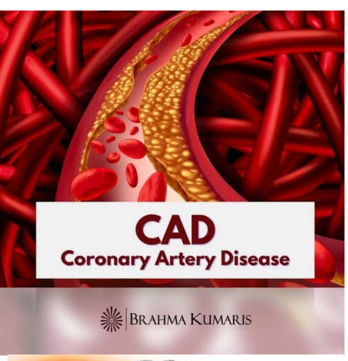

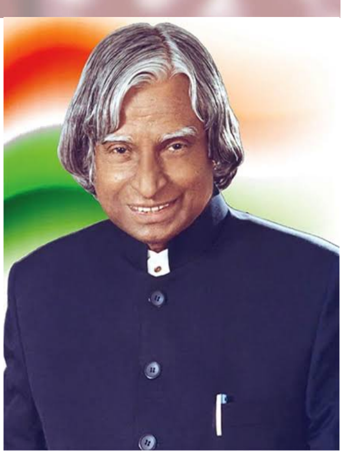
President of India (2002 to 2007)

कैड ग्रुप (दिल वाले बैठे हैं, बहुत अच्छी कान्फ्रेन्स सबने मिलकर की):- अच्छा किया है, आपस में मीटिंग भी की है और प्रेजीडेंट जो है उसकी भी इच्छा है यह कार्य होना चाहिए। तो जैसे उसकी भी इच्छा है, उसको भी साथ मिलाते हुए आगे बढ़ते रहो और साथ-साथ जो ब्राह्मणों की मीटिंग है, उसमें भी अपने प्रोग्राम का समाचार सुना करके राय ले लेना तो सर्व ब्राह्मणों की राय से और शक्ति भर जाती है। बाकी कार्य अच्छा है, करते चलो, फैलाते चलो और भारत की विशेषता प्रगट करते

चलो। मेहनत अच्छी कर रहे हो। प्रोग्राम भी अच्छा किया है, और दिल वालों ने अपनी बड़ी दिल दिखाई, उसकी मुबारक हो। अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- अच्छा है हर टर्न में डबल विदेशियों का आना इस संगठन को चार चांद लगा देता है। डबल विदेशियों को देखकर सभी को उमंग भी आता है, सब डबल विदेशी डबल उमंग उत्साह से आगे उड़ रहे हैं, चल नहीं रहे हैं, उड़ रहे हैं, ऐसे है! उड़ने वाले हो या चलने वाले हो? जो सदा उड़ता रहता है, चलता नहीं वह हाथ उठाओ। अच्छा। वैसे भी देखो विमान में उड़ते ही आना पड़ता है। तो उड़ने का तो आपको अभ्यास है ही। वह शरीर से उड़ने का, यह मन से उड़ने का, हिम्मत भी अच्छी रखी है। बापदादा ने देखो कहाँ कोने-कोने से अपने बच्चों को ढूंढ लिया ना! बहुत अच्छा है, कहलाने में डबल विदेशी हैं, वैसे तो ओरीज्नल भारत के हैं। और राज्य भी कहाँ करना है? भारत में करना है ना! लेकिन सेवा अर्थ पांच ही खण्डों में पहुंच गये हो। और पांच ही खण्डों में भिन्न-भिन्न स्थान में सेवा भी अच्छी उमंग-उत्साह से कर रहे हैं। विघ्न विनाशक हो ना! कोई भी विघ्न आवे

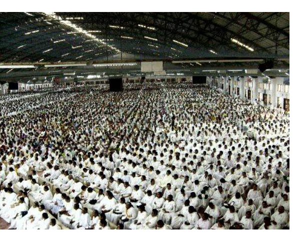

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

घबराने वाले तो नहीं हो ना, यह क्यों हो रहा है, यह क्या हो रहा है, नहीं। जो होता है उसमें हमारी और हिम्मत बढ़ाने का साधन है। घबराने का नहीं, उमंग-उत्साह बढ़ाने का साधन है। ऐसे पक्के हो ना! पक्के हो? या थोड़ा-थोड़ा कच्चे? नहीं, कच्चा शब्द अच्छा नहीं लगता। पक्के हैं, पक्के रहेंगे, पक्के होके साथ चलेंगे। अच्छा।

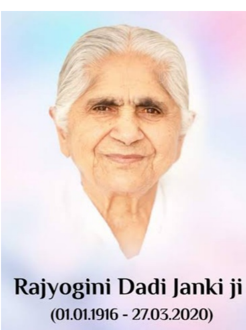

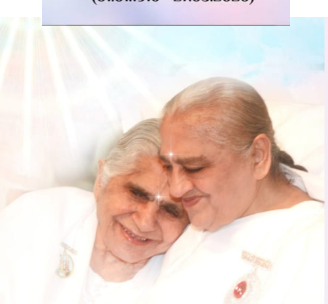

दादी जानकी आस्ट्रेलिया का चक्कर लगाकर आई हैं, उन्होंने बहुत याद दी है:- बापदादा के पास ईमेल में भी सन्देश आये हैं और बापदादा देखते हैं कि आजकल बड़े प्रोग्राम भी ऐसे हो गये हैं जैसे हुए ही पड़े हैं। सभी सीख गये हैं। सेवा के साधनों को कार्य में लगाने का अच्छा अभ्यास हो गया है। बापदादा को आस्ट्रेलिया नम्बरवन दिखाई देता है लेकिन अभी यू.के. थोड़ा नम्बर आगे जा रहा है। आस्ट्रेलिया ने पहले-पहले नम्बरवन लिया है, अभी फिर आस्ट्रेलिया को नम्बरवन होना ही है। यू.के. नम्बर दो नहीं होगा, वह भी नम्बर वन ही होगा। पुराने-पुराने आस्ट्रेलिया के बच्चे बापदादा को याद हैं। और बापदादा की लाडली निर्मल आश्रम, आप लोग तो कहते हैं निर्मला दीदी, दीदी कहते हो ना,

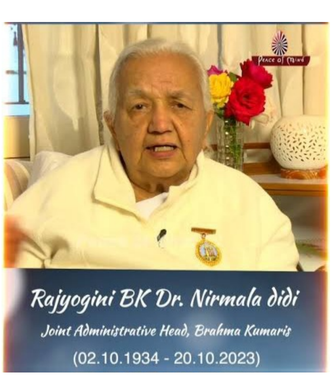

लेकिन बापदादा ने शुरू से उसको टाइटल दिया है निर्मल आश्रम, जिस आश्रम में अनेक आत्माओं ने सहारा लिया और बाप के बने हैं और बन रहे हैं, बनते जायेंगे। तो एक-एक आस्ट्रेलिया निवासी बच्चों को विशेष याद, यह सामने बैठे हैं, आस्ट्रेलिया के हैं ना! आस्ट्रेलिया वाले उठो। बहुत अच्छे। इन्हों को कितना अच्छा उमंग आ रहा है, विश्व की सेवा के लिए खूब तैयारियां कर रहे हैं। बापदादा की मदद है और सफलता भी है ही।

अच्छा - अभी क्या दृढ़ संकल्प कर रहे हो? अभी इसी संकल्प में बैठो कि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। विजय हमारे गले की माला है। इस निश्चय और रूहानी नशे में अनुभवी स्वरूप होके बैठो। अच्छा।

चारों ओर के फिकर से फारिग बेफिक्र बादशाहों को, सदा बेगमपुर के बादशाह स्वरूप में स्थित रहने वाले बच्चों को, सर्व खजानों से सम्पन्न रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड सर्व बच्चों को, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ती कला वाले बच्चों को, सदा समाप्ति

को समीप लाने वाले बापदादा समान बच्चों को बापदादा का यादप्यार, दिल की दुवायें, वरदाता के वरदान और नमस्ते।

वरदान:- स्वयं की सर्व कमजोरियों को दान की विधि से समाप्त करने वाले दाता, विधाता भव

भक्ति में यह नियम होता है कि जब कोई वस्तु की कमी होती है तो कहते हैं दान करो। दान करने से देना-लेना हो जाता है।

तो किसी भी कमजोरी को समाप्त करने के लिए दाता और विधाता बनो। यदि आप औरों को बाप का खजाना देने के निमित्त सहारा बनेंगे तो कमजोरियों का किनारा स्वत: हो जायेगा।

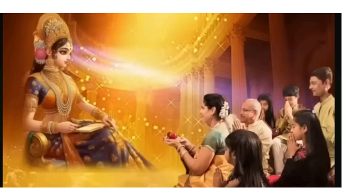

अपने दाता-विधातापन के शक्तिशाली संस्कार को इमर्ज करो तो कमजोर संस्कार स्वत:समाप्त हो जायेगा।

स्लोगन:- अपने श्रेष्ठ भाग्य के गुण गाते रहो - कमजोरियों के नहीं।

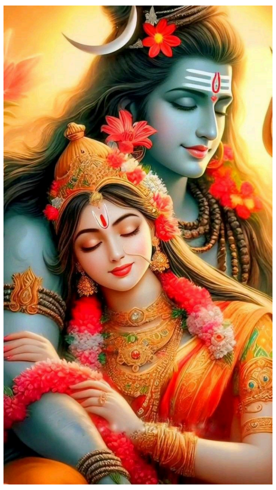

24-08-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 30-11-06 मधुबन

अव्यक्त इशारे -

सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

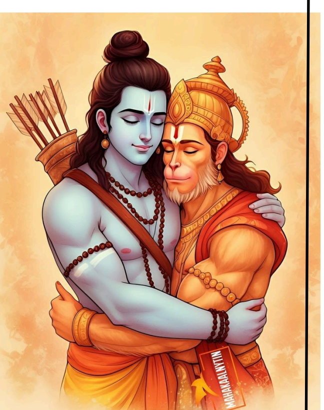

जिससे प्यार होता है, उसको जो अच्छा लगता है वही किया जाता है।

तो बाप को बच्चों का अपसेट होना अच्छा नहीं लगता, इसलिए कभी भी यह नहीं कहो कि क्या करें, बात ही ऐसी थी इसलिए अपसेट हो गये...

अगर बात अपसेट की आती भी है तो आप अपसेट स्थिति में नहीं आओ। दिल से बाबा कहो और उसी प्यार में समा जाओ।

जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे
तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे ★★★

देते न आप साथ तो मर जाते हम कभी के
देते न आप साथ तो मर जाते हम कभी के
पूरे हुए हैं आप से, अरमान ज़िंदगी के
हम ज़िंदगी को आपकी
हम ज़िंदगी को आपकी
हम ज़िंदगी को आपकी सौगात कहेंगे
तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे

चाहेंगे, निभाएंगे, सराहेंगे आप ही को
चाहेंगे, निभाएंगे, सराहेंगे आप ही को
आँखों में दम है जब तक, देखेंगे आप ही को
अपनी ज़ुबान से आपके
अपनी ज़ुबान से आपके
अपनी ज़ुबान से आपके जज़बात कहेंगे
तुम दिन को अगर रात कहो, रात कहेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे
जो तुमको हो पसंद, वही बात करेंगे

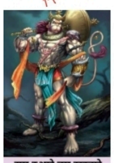

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व सम्बन्धों की सर्व रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रहा है क्या कि जिस कारण दृष्टि वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल की, फीमेल की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की मेल के तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बनकर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्टा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्टा का कीड़ा! ऐसे

स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो? क्या ऐसे को बापदादा टच कर सकता है? स्नेह की दृष्टि दे सकता है? अर्जी मान सकता है? कम्प्लेन्ट व उलहना सुन सकता है? इतने नॉलेजफुल होने के बाद भी वृत्ति और दृष्टि चंचल हो, तो उसे भक्त आत्मा से भी गिरी हुई आत्मा कहेंगे। भक्त भी किसी युक्ति से अपनी वृत्ति को स्थिर करते हैं। तो मास्टर नॉलेजफुल भक्त आत्मा से भी गिर जाते हैं। तो क्या ऐसी आत्मा की कोई प्रजा बनेगी? जमादार की कोई प्रजा बनेगी क्या या वह स्वयं प्रजा बनेंगे?

मुख्य यह दो कम्प्लेन्ट्स है। एक-दो पार्टी से मिलते हो तो यह कम्प्लेन्ट ही विशेष होती है। इसलिये ड्रामा अनुसार बार-बार यही बातें करना और बार-बार बाप द्वारा यही शिक्षा मिलना इसका भी हिसाब-किताब बनता है। इसलिए ड्रामा अनुसार अब तक भी स्पेशल सर्विस लेना यह पार्ट भी समाप्त हो रहा है। इसमें भी रहस्य है। वही बात कई बार पूछते हैं - एक वर्ष वायदा करके जाते हैं कि अगले वर्ष यह कम्प्लेन्ट नहीं होगी। दूसरे वर्ष फिर दोबारा कहते कि अगले वर्ष नहीं होगी। जो वर्ष बीता वह किस खाते में गया? समझते हैं कि बापदादा को वायदा भूल जाते हैं? समझते हैं बापदादा को क्या याद होगा? बापदादा को सबके वायदे याद रहते हैं लेकिन बापदादा बच्चों का डिस-रिगार्ड नहीं करते। सामने बैठ कहे कि वायदा नहीं निभाया, यह भी डिसरिगार्ड है। जब सिर का ताज बना रहे हैं, स्वयं से भी आगे रख रहे हैं, तो ऐसी आत्मा का डिसरिगार्ड कैसे करेंगे? इसलिए मुस्कराते हैं। ऐसे नहीं कि याद नहीं रहता है। आत्माओं को तो चला देते हैं। निमित्त बनी हुई टीचरों को बडी चतुराई से चला देते हैं। कहेंगे आपने हमारे भावार्थ को नहीं समझा। हमारा भाव यह नहीं था, शब्द मुख से निकल गया। लेकिन बापदादा भाव के भी भाव को जानता है। उससे छिपा नहीं सकेंगे। टीचर फिर भी समझेंगे मेरे से

गलती हो गई, हो सकता है। लेकिन बाप से तो नहीं हो सकती है ना? इसलिये अब छोटी-छोटी बातों के लिये समय नहीं। यह भी व्यर्थ में एड हो जाता है। बाप से जितनी मेहनत लेते हो, उतना रिटर्न करना होगा। व्यक्त रूप में मेहनत ली। अव्यक्त रूप में भी कितने वर्ष हो गये। छठा वर्ष चल रहा है। अव्यक्त रूप में भी छ वर्ष इन्हीं बातों पर शिक्षा मिलती रही। अब तक भी वही शिक्षा चाहिए? अभी सर्विस लेने का टाइम है अथवा रिटर्न करने का टाइम है? अगर रिटर्न नहीं करेंगे तो प्रजा नहीं बना सकेंगे। इसलिये अब स्वयं को पॉवरफुल बनाओ। नॉलेजफुल बनाओ। अनेक प्रकार की क्यू से स्वयं को मुक्त करो। युक्ति जो मिलती है उसको काम में नहीं लगाते हो, इसलिये मुक्त नहीं हो पाते।

(11.07.1974)

(उ) संगमयुग के ब्रह्म-मुहूर्त में, अमृतवेले में श्रेष्ठ जन्म की आँख खोली और क्या मिला ? कितनी सौगातें मिलीं ? **आँख खोली बूढ़े बाबा को देखा। सफ़ेद-सफ़ेद बाबा को देखा। सफ़ेद में लाल को देखा ना !** कौन देखा ? शान्तिकर्ता बाप देखा कितनी सौगातें दीं ? इतनी सौगातें दीं जो जन्म-जन्म उन सौगातों से ही पलते रहेंगे। कुछ खरीद नहीं करना पड़ेगा। सबसे बड़ी-ते-बड़ी सौगात हीरे से भी मूल्यवान स्नेह का कंगन, ईश्वरीय जादू का कंगन दिया, जिस द्वारा जो चाहो जब चाहो संकल्प से आह्वान किया और प्राप्त हुआ। अप्राप्त कोई वस्तु नहीं ब्राह्मणों के

24/8/25

खज़ाने में। ऐसी सौगात आँख खोलते ही सभी बच्चों को मिली। सबको मिली है ना ? कोई रह तो नहीं गया ना ?

आज ये गीत समर्पित है - उस प्यारे शिव साजन को,
(आप चाहो तो सजनी भी बना सकते है।)
जिसमे बस उनको पाने की ही ख्वाहिश/धुन निहित हैं।

जिस समय वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है तो उस समय स्वयं को यह समझना चाहिए कि क्या मैंने सर्व-सम्बन्धों की सर्व-रसनायें बाप द्वारा प्राप्त नहीं की हैं? कोई रस रह गया है क्या कि जिस कारण दृष्टि और वृत्ति चंचल होती है? जिस सम्बन्ध से भी वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है उसी सम्बन्ध की रसना यदि बाप से लेने का अनुभव करो तो क्या दूसरी तरफ दृष्टि जायेगी? समझो कोई मेल (male) की, फीमेल (female) की तरफ दृष्टि जाती है या फीमेल की, मेल की तरफ जाती है तो क्या बाप सर्व रूप धारण नहीं कर सकता? साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी बन व साजन बन कर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा-सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो? बाप से सर्व-सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए। और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान् और कहाँ मैं, इस समय क्या बन गया हूँ? रौरव नर्कवासी विष्ठा का कीड़ा ऐसे स्वयं का रूप सामने लाओ और तुलना करो कि कल क्या था और अब क्या हूँ? तख्तनशीन से क्या बन गया हूँ? तख्त-ताज को छोड़ क्या ले रहा हूँ? गन्दगी। तो उस समय क्या बन गये? गन्दगी को देखने वाला व धारण करने वाला कौन हुआ? गन्दा काम करने वाले को क्या कहते हैं? बिल्कुल जिम्मेवार आत्मा से जमादार बन जाते हो। क्या ऐसे को बाप-दादा टच कर सकता

A.V. 11/7/74

¥¥¥¥====¥¥¥
Song from movie: tum mile (2009)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun,
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun.
(ओ मेरे प्यारे बाबा,
आप मेरे दिल की धड़कनो को गौर से सुनो, जो की अब एक ही इबादत/worship कर रहा हैं जिस में...
आप को पाने की अर्थात आप समान बनने की, आप में समाने की या यूं कहो कि आपकी श्रीमत पर चल, आपकी सर्व आशाओं को पूरा कर - आपको हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।)

Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun
(इस हिरे तुल्य संगमयुग के सुहावने समय रूपी डाल से अब बाकी बचे जो कुछ पल(पत्ते) हैं, उन लम्हो को तुम्हारी ही यादों से और तुम्हारे साथ से अपने बना लूँ।)

link of the song
↓
Click

Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun
(तो बस, आपको हाँसिल करने की जैसे की एक धुन सी लगी हैं।)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loon Hasil Lagi Hai Yahi Dhun
Zindgi Ki Shakh Se Loon Kuchh Hasin Pal me Chun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

other songs to submerge in baba's love
↓
Click

Jo Bhi Jitne Pal Jeeyu
Unhe Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Kal Ho Ab Mera Use Tere Sang Jeeyu
Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Ho Rasta Use Tere Sang Chalu

(ओ मेरे सच्चे साथी,
अब इस संगम के जितने कुछ पल बचे हैं, वो हर एक पल मैं तुम्हारे साथ ही जीऊ,
आने वाला जो कल हैं उसे भी तुम्हारे साथ ही जीऊं,
इस शरीर की हर सांस जो चलती हैं वो सभी तुजसे combined रह कर ही भरूँ,
एवं
चाहे जो भी,जैसा भी अति अति अति दुर्गम रास्ता ही क्यों न हो जिसपे चाहे आग हो, शूल हो या फूल, in short कुछ भी....
बस...तुम्हारी श्रीमत पर तुम्हारे साथ ही चलूँ।)

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

#######
Mujhko De Tu Mit Jaane
Ab Khudse Dil Mil Jaane
Kyu Hai Yeh Itna Fasla....
(ओ मुज परवाने की समां...।
मुज परवाने को अब तुज पे मीट जाने की इज़ाज़त दे दो,
और तुम्हारे दिल से मेरे दिल को मिल जाने दो,
पता नही, क्यों अब तक भी इतना फांसला रहा हुआ है..?
क्योंकि तुम्हारे और मेरे बीच का ये फासला अब मुझसे सहन/बर्दास्त नहीं होता हैं।)

Lamhe Yeh Phir Naa Aane
Inko Tu Naa De Jaane
Tu Mujh Pe Khudko De Loota.....
(इस संगम के अति अति अति अमूल्य पल फिर सारे कल्प में कभी नहीं आने हैं, तो इन लम्हों को अब जाया/waste नहीं करने है।
तो अब इन फासलों को ख़त्म कर तुम अपने को मुज पर लूटा दो।)

Tujhe Tujhse Tod Loo Kahi Khudse Jod Loo
Mere Jism O Jaan Main Aa Teri Khusboo Odh Loo
(या फिर अब तो यही द्रढ़ संकल्प हैं की...
तुज को तुजसे ही तोड़ कर मुज से जोड़ दूँ अर्थात माया रावण को हरा कर, तुम पर जीत पा लूँ,
एवं मुज आत्मा में अब तुम्हारे प्यार एवं combined रूप के साथ की - खुशबु को सदा के लियें ओढ़ लूँ, जो किसी की संकल्प में भी हिम्मत न हो तुम्हे मुझसे और मुजे तुमसे अलग करने की।)

Jo Bhi Saanse Main Bharoo Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo Hona Rasta Use Tere Sang Chalu
Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

######
Bahoon Main De Bas Jaane
Sine Main De Chhup Jaane
Tujh Bin Main Jaaunga Kaha

(ओ मेरे प्यारे हमदम/हम सफर...,
तुम मुझे अपनी बाँहों में बस जाने/समा जाने की इज़ाज़त दो ,
या तुम्हारे दिलमें छुप जाने की (जैसे शिप में मोती) इज़ाज़त दे दो,
क्योंकि तुम्हारे अलावा अब मुझे इस जहान में कुछ दीखता ही नहीं।
तो तुम ही मुझे बताओ की अब मैं जाऊं तो जाऊं कहाँ...?)

Tujhse He Mujhe Ko Paane Yaado K Woh Nazrane
Ek Jinpe Haq Ho Bas Mera

(ओ मेरे सिकीलधे/Long lost and now found सच्चे साथी,
मुझे तुम्हारे साथ के अनुभवों की कुछ ऐसी तो सौगातें/ नज़राने प्राप्त करने हैं जिस पर सिर्फ और सिर्फ मेरा ही हक़ हो,

जिससे की मैं द्वापर से भक्तिमार्ग में, जब भी बिना पहचान के भी आपको याद करूँ तो आपके प्यार और आपके साथ की वही भासना मुजे मिले जो अभी इस समय संगम पर मुजे मिल रही हैं।)

Teri Yaado Main Rahoo
Tere Khwabo Main Jagoo

(मैं इतना तो तुम्हारी याद में खोया हुआ combined/ submerge रहूँ की,
मेरे ख्वाबो की तो बात छोड़ो परंतु तुमको भी तुम्हारे ख्वाबोमें अर्थात हर एक संकल्पमें मैं ही मैं दिखाई दूँ,
in short, तुम भी मुझे याद किये बिना एक पल भी रह न सकों।)

Mujhe Doondhe Jab Koi
Teri Aankho Main Milu

(और जब मुझे कोई भी ढूंढते हुऐ पूछे की मैं कहाँ मिलूँगा?

तो वह बिन सोचे, एक ही उत्तर दे की ...
उस अल्हड़ का तो बस एक ही ठिकाना हैं,
और वो हैं शिव सागर/ शिवबाबा की याद या आंखे...)

Jo Bhi Saanse Main Bharoo
Unhe Tere Sang Bharoo
Chahe Jo ho Rasta Use Tere Sang Chalu

Dil Ibadat Kar Raha Hai
Dhadkane Meri Sun
Tujhko Main Kar Loo Hasil Lagi Hai Yahi Dhun

जैसे सारी नॉलेज का रिवाइज़ कोर्स कर रहे हो, वैसे ही अपनी प्राप्ति व पुरूषार्थ का चार्ट भी शुरू से रिवाइज़ करके देखो।
उसमें मुख्य चार सब्जेक्ट्स हैं। चारों को सामने रखो और हर सब्जेक्ट्स में पास हो उसको देखो।
जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं – ज्ञान, योग, दैवी गुणों की धारणा और ईश्वरीय सेवा।

वैसे ही यहाँ चार सम्बन्ध भी हैं,
तीन सम्बन्ध तो स्पष्ट हैं – सत् बाप, सत् शिक्षक और सद्गुरू परन्तु
चौथा सम्बन्ध है साजन और सजनी का।
यह भी एक विशेष सम्बन्ध है-आत्मा-परमात्मा का मिलन अर्थात् सगाई।
यह सम्बन्ध भी पुरूषार्थ को सहज कर देता है।

Mind it...

जैसे चार सब्जेक्ट्स हैं, वैसे ही चार सम्बन्ध सामने लाओ और इन चार सम्बन्धों के आधार से मुख्य चार धारणायें हैं।
एक तो बाप के सम्बन्ध में-’फरमान वरदार’,
शिक्षक के सम्बन्ध में-’इमानदार’ और
गुरू के सम्बन्ध में-’आज्ञाकारी’ और
साजन के सम्बन्ध में-’वफादार।’

जो यह चारों सम्बन्ध और चार विशेष धारणायें इन सभी को रिवाइज करके देखो।

AV- 21/7/73